UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180790
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82J V31K Accession No. P. G. H1123

Author वर्मा, वृन्दावनलाल

Title काश्मीर का काँटा 1958

This book should be returned on or before the date last marked below.

काश्मीर का कांटा

(ऐतिहासिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा

मयूर प्रकाशन
झाँसी • दिल्ली

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा, बी.ए.एल-एल.बी.
मयूर-प्रकाशन, झाँसी.

चतुर्थ संस्करण—१९५८
मूल्य एक रुपया

मुद्रक—
स्वाधीन प्रेस, झाँसी।

परिचय

अक्टूबर सन् १९४७ की बात है जब पाकिस्तानियों और कबीलाइयों ने षड़यन्त्र करके काश्मीर पर कई मार्गों से हमला किया। काश्मीर की १२ हजार सेना को वहाँ का तत्कालीन दीवान पहले ही बिखेर चुका था। इस सेना के एक दस्ते का ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह था। वह १२ हजार आक्रमणकारियों का मुक़ाबला करने के लिये अपनी छोटी सी सेना लेकर मुज़फ़्फराबाद की दिशा में गया। मुज़फ़्फराबाद में कबीलाइयों ने डुगडुगी पीट कर घोषणा की थी कि श्रीनगर में ईद मनाई जावेगी। ईद मनाने से उनका प्रयोजन क़तल, लूटमार, और आग लगाने से था।

ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह ने प्रण कर लिया था कि यह न होने पावेगा। लुटेरों ने बिगेडियर राजेन्द्रसिंह की छोटी-सी सेना के मुसलमान सिपाहियों को बरग़ला कर अपनी ओर फोड़ लिया। वे बेईमानी करके दुश्मनों से जा मिले। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह की सेना में लगभग १४० योद्धा रह गये और सामने नदी के पुल के उस पार, जो नमलापुर कहलाता है, बारह हजार सुसज्जित पाकिस्तानी और कबीलाई !! वर्तमान युग के सभी हथियारों के साथ !!!

काश्मीर के महाराज ने उस समय तक यही निश्चय न कर पाया था कि क्या करे—हिन्दुस्थान से मिल जायँ, स्वतन्त्र होकर रहें या पाकिस्तान का आसरा पकड़े।

परन्तु ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह और उसके सैनिकों के मन में अनिश्चय बिलकुल न था। वे अपने जीते जी इन डाकुओं द्वारा श्रीनगर का विनाश न होने देने का प्रण कर चुके थे।

उनको कहीं से भी किसी प्रकार की सहायता की आशा न थी। सब सहारे टूट चुके थे।

फिर भी इन वीरों ने देश-सेवा के लिये अपने सरों पर कफ़न बांधे। इनमें कुछ स्त्री–डाक्टर भी थीं। वीरता में वे अपने भाइयों से पीछे नहीं रहीं।

वे सब २४ अक्टूबर को युद्ध में बलिदान हो गये।

सम्पूर्ण निस्सहायता की भी परिस्थिति में इन स्त्री–पुरुषों ने जो जौहर दिखलाया वह सूरमाओं के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। वह वीरता अनुपम थी। काश्मीर क्या, भारत भर उन वीरों का चिरकृतज्ञ रहेगा।

'काश्मीर का कांटा' एकांकी नाटक में इसी चमत्कारपूर्ण देश सेवा की कहानी है।

वृन्दावनलाल वर्मा

दो शब्द

काश्मीर पर हमला एक सङ्गठित षड़यन्त्र है। कबीलाइयों की छाया में जो राजनैतिक पेंतरा है, निश्चय ही काश्मीर के, भारत के और एशिया के भविष्य पर उसका प्रभाव पड़ सकता है। वर्मा जी ने इस नाटक में बड़ी सुलझी भाषा में, रोचक ढङ्ग से उसकी ओर संकेत किया है।

उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व स्वास्थ्य और स्वायत्त-शासन-मन्त्री माननीय श्री आत्माराम गोविन्द जी खेर ने जब प्रथमवार, २६-१२-४८ को इस नाटक को देखा तब इसको बहुत पसन्द किया। उन्होंने कहा था—'वर्मा जी ने हिन्दी की सेवा करके भारत का माथा ऊँचा किया है। उनका हिन्दी में विशिष्ट स्थान है। परन्तु वे जितने बड़े साधक हैं, कम लोग जानते हैं—उतने बड़े मानव भी हैं।'

१८ जनवरी ४८ को उत्तर प्रदेश के प्रधान-मन्त्री माननीय श्री गोविन्दवल्लभ जी पन्त ने भी इसको अभिनीत होते देखा था, उनकी सराहना मिली।

वर्मा जी की मानवता की साधना ही उनकी विभिन्न कृतियों में भिन्न-भिन्न रूप में झांकती है। हिन्दी पाठकों के सामने, वर्मा जी के स्वस्थ विचार, जो उनके स्वस्थ शरीर के अनुकूल ही हैं, प्रतिबिम्बित करते रहने का, कार्य हमारा है। दुख है, उसमें भी अनेक बाधाओं के कारण विलम्ब हो जाता है। हम प्रेमी पाठकों से उस विलम्ब के लिये क्षमा चाहते हैं।

विनीत :—

झांसी

द्वारिकेश

❀ नाटक के पात्र ❀

पुरुष—

❀ ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह

❀ मेजर भीमसिंह

❀ अर्दली

❀ दो कैदी

स्त्री—

❀ कैप्टिन पार्वती (डाक्टर)

❀ कैप्टिन गौरी (डाक्टर)

अभिनय के पात्र

पहलीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कञ्चन
ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू
(भू० पू० उपनिर्देशक, न्यू–थिएटर्स)
मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०
कैप्टेन पार्वती—सुश्री गान्धारी जौहरी
कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सक्सेना
अर्दली—श्री दशरथराव पवार
पहला कैदी—श्री महावीरप्रसाद अग्निहोत्री,
बी० एस० सी०, एल-एल० बी०
दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०

दूसरीबार

परिचयदाता पठान—श्री इन्द्रकुमार कंचन
ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह—श्री बाबूलाल मारू
(भू० पू० उपनिर्देशक, न्यू थिएटर्स)
मेजर भीमसिंह—श्री जयदेव वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०
कैप्टेन पार्वती—सुश्री सरला गुप्त
कैप्टेन गौरी—सुश्री सावित्री सक्सेना
अर्दली—श्री दशरथराव पवार
पहला कैदी—श्री छोटेलाल पांडे
दूसरा कैदी—श्री रामकृष्ण वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०

काश्मीर का कांटा

[स्थान काश्मीर का पहाड़ी भाग—उड़ी के पास, नमला पुल के बिलकुल निकट। बिखरे हुये ऊँचे-नीचे पहाड़ों के बीच में नदी, नाले झरने। इधर-उधर हरे-भरे विशाल पेड़, रङ्ग-बिरंगे फूलों से लदे हुये छोड़े-बड़े पौधे और एक ओर सेब का उजड़ा हुआ बाग। कुछ दूरी पर एक छोटा सा अधजला गांव। उसके पास रोंदे हुये हरे खेत एक ओर से साफ-सुथरा राजमार्ग आया है, जिसके दोनों ओर सनोबर के ऊँचे-ऊंचे पेड़ हैं। यह मार्ग पहाड़ों में होकर आगे चला गया है और पुल पर से नदी को पार करता है। समय—क्वांर के शुक्ल पक्ष के अन्तिम सप्ताह की रात्रि। चांदनी में दूर के पहाड़ की चोटी पर हिम झिलमिला रही है। पहाड़ियों की ओट लिये हुये काश्मीरी सेना टोलियां बाँधे हुये इधर-उधर गढ़ों और खाइयों मे मोर्चे लगाकर पड़ी हुई है, मानो आक्रमणकारियों पर टूट पड़ने की घात में हो। इस काश्मीरी सेना का भिन्न-भिन्न टोलियों का सेनानयक के एक छोटे से तम्बू के साथ सम्बन्ध है जो एक ओट में खड़ा कर लिया गया है। तम्बू एक ओर से खुला है। सेनानायक ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह, तम्बू में, काठ की कुर्सी पर बैठा हुआ है। अगल-बगल में काठ की कुर्सियां पड़ी हुई हैं। सामने छोटी सी मेज़ है जिस पर टेलीफोन लगा हुआ है और कुछ कागज़ रक्खे है। इस टेलीफोन का सम्बन्ध श्रीनगर से भी है। ब्रिगेडियर फोन को कान से लगाये है और कुछ चिन्तित दिखलाई पड़ता है। वह टेलीफोन की डांडी पर बार-बार उङ्गलियां पटकता है, पर उसको

श्रीनगर से कोई उत्तर नहीं मिलता। वह झल्ला कर फोन को मेज पर रख देता है और खड़ा हो जाता है। ब्रिगेडियर सुन्दर आकृति का पुष्टदेह सैनिक है।]

ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह—अर्दली ! अर्दली !!

(अर्दली का प्रवेश)

अर्दली—आज्ञा।

ब्रिगेडियर—कोई आहट मिल रही है ?

अर्दली—कोई भी नहीं।

ब्रिगेडियर—मेजर भीमसिंह को भेजो। अपने तम्बू में होंगे।

अर्दली—मेजर भीमसिंह, पुल के पास वाली पहाड़ी पर, टोली नम्बर १० को देखने के लिये गये हैं।

ब्रिगेडियर—कितनी देर हुई ?

अर्दली—वहां पहुँच गये होंगे।

ब्रिगेडियर—अच्छा जाओ।

(अर्दली जाता है)

ब्रिगेडियर—(टेलीफोन को उठाकर और टोली नम्बर १० के फोन से संयुक्त करके) देखिये—हां—मेजर भीमसिंह—क्या ? हाँ तोप का ठिया ठीक कर रहे है ?—पहले क्या ठिया ग़लत था—हूं—अच्छा, बदलने की जरूरत पड़ी है—हां—क्या कहा ?—सब चले गये हैं ?—कम से कम इनको मैं ईमानदार समझता था। हुं—हथियार भी ले गये। ओफ़ !! परन्तु परवाह मत करो। और भी दृढ़ हो जाओ। तुम सब कितने रह गये हो ?—ऐं केवल ग्यारह !—हूं—अच्छा—मैं और सिपाही भेजता हूँ। मेजर भीमसिंह को जल्दी लौटने को कहो। हाँ—(टेलीफोन को रख देता है और मेज़ पर रक्खे हुये एक समाचार-पत्र को विचलता में उठाता है और कुछ क्षण टहलता है। फिर पत्र पर आंखें

घुमाता है। परन्तु वह समाचार या लेख नहीं पढ़ता, विज्ञापन स्तम्भों में से एक विज्ञापन को पढ़ता है। पढ़ता जाता है और बहुत बेसुरे ढङ्ग से गुनगुनाता है)

तारे कहां रात से कहां चांदनी छुटकी?
नीले नभ को छोड़कर किस कोने में भटकी?

क्या बढ़िया विज्ञापन निकलने लगे हैं पत्रों में! (पढ़ता है) एक बहुत ही सुन्दर कुआंरी लड़की चाहिये, जिसका बाप बहुत रुपये वाला हो,—ऐसे लड़के के लिये, जिसका बाप करोड़पति है। ह! ह!! ह!!! अर्दली, अर्दली।

(अर्दली आता है)

अर्दली—आज्ञा जनरल साहब।

ब्रिगेडियर—तुम ब्याह करना चाहते हो?

अर्दली—ब्याह जनरल साहब?

ब्रिगेडियर—हां जी। (समाचार पत्र पर दृष्टि घुमाते हुये) देखो न, इसमें एक विज्ञापन और है—(पढ़ता है) लड़की बहुत पढ़ी लिखी, और अत्यन्त सुन्दर। अखबार के द्वारा, प्रेम-लीला और भांवर के जरिये जन्म भर के लिये जुगल जोड़ी!!

अर्दली—ब्याह जनरल साहब!!! मुज़फ्फराबाद में कबीलाई पठानों ने, डुगडुगी पीटी है कि श्रीनगर में ईद मनायेंगे। ब्याह!!!! ब्याह कैसा?

ब्रिगेडियर—इसी अखबार में कबीलाइयों की वह घोषणा भी छपी है। हमको तुमको भी कोई बड़ा उत्सव मनाना चाहिये। समझे? क्या समझे?

अर्दली—आज्ञा? कबीलाई बरफ़ की आंधी की तरह भरभराते चले आ रहे है। माफ करें तो विनती करूं—यह उत्सव मनाने का समय नहीं है—हम लोगों ने तो मौत के साथ उत्सव मनाने की ठानी है।

ब्रिगेडियर —(हँसते हुये खड़े होकर) शाबाश; धन्य मेरे सिपाही। ब्याह से मेरा मतलब इसी प्रण से है।

(टेलीफोन की घण्टी बजती है)

शायद श्रीनगर से कुछ सेना सहायता के लिये आ रही है। (उदास स्वर में) आवे और न आवे। वहां होगी भी कितनी ?

(घण्टी फिर बजती है)

ब्रिगेडियर—(फोन को कान से लगाकर) जी, मैं ही हूं—जी राजेन्द्रसिंह। श्रीनगर से सेना बिलकुल नहीं भेजी जा सकती !! हूं। —खैर। हूं—श्रीनगर और बारामूला के बीच के रास्ता और फोन की रखवाली के लिये थोड़े से ही सिपाही हैं। उनको ड्यूटी पर से नहीं हटाया जा सकता।—जी—अभी नमला पुल सुरक्षित है। कबीलाई —लुटेरे—पुल को पार नहीं कर पाये है। पुल को तोड़ देना चाहता हूँ, परन्तु गाँठ में डाइनामाईट बिलकुल नहीं है। क्या आप थोड़ा सा भेज सकते हैं ? हूं—नहीं भेज सकते तो जाने दीजिये। खैर। जी ? —हूं—हम कुल एक सौ बयालीस रह गये हैं। हमारे जितने मुसलमान सिपाही थे सब के सब लुटेरों से जा मिले हैं—पहले ही सूचना दे दी थी। जी—हिन्दुस्थान से मदद नहीं आ रही है ? हूं—अभी हिन्दुस्तान सरकार के साथ शामिल होने की बातचीत ही चल रही है !! कुछ तै नहीं हुआ ? हूँ—हूं—खैर। हूँ—जब तक हम लोगों में से एक भी ज़िन्दा है, तब तक कबीलाई पुल के इस पार नहीं आ सकेंगे। जी हाँ—ज़रूर ? (हँसकर) हमारा अर्दली ब्याह करने जा रहा है। हां—हां सच मानिये और हम सबके सब ब्याह करने जा रहे हैं—(और भी ज़ोर के साथ हँसकर) बरात अमरपुरी जायगी। अमरपुरी। दुलहिन का नाम है मौत—जी ठीक कहता हूँ। उसके बराबर सुन्दर और कोई दुलहिन नहीं। इतनी सुन्दर की अखबार वाले उसकी शादी का विज्ञापन कितने भी दामों कभी पहले से नहीं छापेंगे। (हँसते हुये ही) हाँ, भाँवर पड जाने पर फिर

मुफ्त में छाप देंगे। (नेपथ्य में धड़ाके की आवाज होती है) पड़ोस में कुछ गड़बड़ है। महाराज कहाँ हैं? जी? अच्छा! हूं—हां आप —महाराज से नमस्ते कह दीजियेगा।—धन्यवाद। हम सब एक सौ बयालीस सिपाहियों का। हूँ घबराइये नहीं। हां ग़लत नहीं कह रहा हूं। धन्यवाद। सारे काश्मीर को हम लोगों का नमस्ते, और यदि काश्मीर हिन्दुस्थान में मिल जाय तो उसको भी नमस्ते, नमस्ते। टेलीफोन रख देता है) अर्दली! अरे तुम यहीं खड़े थे!! कोई हर्ज नहीं कोई हर्ज नहीं। हम सब के सब दूल्हा हैं और सब के सब बराती!!

अर्दली—जनरल साहब, मैं अदब-कायदा, शासन डिस्पिलिन सब भूल गया था। क्षमा किया जाऊँ।

जनरल—मैं भी सब भूल गया। (हँसकर) अब ब्याह होने में ज्यादा देर नहीं है। (टहलते हुये) ब्याह के पहले दूल्हा शासन-वासन सब भूल जाता है। समाचार पत्रों के जरिये ब्याह छिपलुक कर होता है और हम लोग खोलकर और मन भरके करेंगे। ब्रिगेडियर और अर्दली में कोई अन्तर नहीं। अच्छा, डाक्टर पार्वती देवी और डाक्टर गौरीदेवी को भेजो। (बैठ जाता है)

अर्दली—जो आज्ञा। (प्रसन्न होकर)

(पार्वती और गौरी आती हैं। दोनों युवतियाँ हैं और सुन्दर। राजेन्द्रसिंह अभिवादन के लिये खड़ा हो जाता और उनको बिठला लेता है। ज़रा बारीकी के साथ देखने पर साफ़ मालूम हो जाता है कि वे दोनों कई रात से नहीं सोई हैं।)

ब्रिगेडियर—देवी पार्वती, अब अस्पताल की जरूरत नहीं रहेगी—देवी गौरी—

पार्वती—क्यों जनरल साहब? क्या इस स्थान को छोड़ रहे हैं? सहस्रों की संख्या में कबीलाई लुटेरे पुल पर से पिल पड़ेंगे और तुरन्त बारामूला को अधिकार में लेंगे। फिर श्रीनगर की कुशल कहां?

ब्रिगेडियर—अस्पताल नहीं रहेगा और अभी कबीलाइयों को लोहे के चने चबाने बाक़ी हैं। देवी गौरी और आप दोनों, अस्पताली सामान के साथ तुरन्त श्रीनगर जाइये।

गौरी—समझ में नहीं आया।

ब्रिगेडियर—मेरा आदेश बिलकुल स्पष्ट है। आप लोगों की जरूरत नहीं है।

दोनों—बिलकुल समझ में नहीं आया।

ब्रिगेडियर—और न किसी अस्पताली सामान की जरूरत है।

(वे दोनों एक दूसरे का मुँह देखने लगती हैं)

दोनों—बात क्या है।

ब्रिगेडियर—बात बिलकुल साफ है। (हँसते हुये) आप लोग घायलों की ही तो मरहम पट्टी और देखभाल करती हैं न? मरे हुओं पर तो आपका कोई उपाय है ही नहीं। हमारी इस टुकड़ी में अब कोई भी घायल नहीं होगा।

पार्वती—आप बहुत जागे हैं। थोड़ा सा सो लीजिये।

ब्रिगेडियर—और हम सबके सब दूल्हा बनने जा रहे हैं। ह! ह!! ह!!! ह!!!!

गौरी—मैं भी यही कहने वाली थी। सो लेने से जी हल्का हो जायगा। दिमाग में ठंडक देने वाली मैं कोई दवा बनाये लाती हूं।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) आप समझती हैं कि मेरे दिमाग में कुछ फितूर हो गया है। बिलकुल सम्भव है। परन्तु जितनी ठण्डक आज तीन रातों के जागरण पर भी मन में पा रहा हूं उतनी कभी मन में अनुभव नहीं की थी। हम लोगों में से अब कोई घायल नहीं होगा हम सब मरने जा रहे हैं। (और भी हँसकर) हमारी लाशों की भी कोई चिन्ता नहीं की जानी चाहिये। कबीलाई लुटेरे श्रीनगर में ईद नहीं मना

सकेंगे। नहीं मना सकेंगे। उनको हमारी लाशों पर ईद मनानी होगी। अब आया आपकी समझ में ?

दोनों—ऐं !!!

ब्रिगेडियर—हां। सीमान्त और पाकिस्तान के तोते अपने यहां के अनार छोड़ कर काश्मीर के अखरोट तोड़ने आ रहे हैं ! आप लोगों की और आपके सहायकों की तथा किसी भी अस्पताली सामान की ज़रूरत नहीं। इसको बचा ले जाइये। यदि काश्मीर हिन्दुस्तान में शामिल हो गया और काश्मीर की सहायता के लिये हमारे हिन्दुस्थानी भाई आ गये तो वह सामान उनके काम में आवेगा।

गौरी—(कण्ठावरोध के साथ) काश्मीर हिन्दुस्थान से कटकर नहीं रह सकता। महाराज भले ही सोच विचार की धार में पड़े हों परन्तु महारानी साहब के निर्णय और निश्चय में कोई सन्देह नहीं।

ब्रिगेडियर—तो उनके निश्चय को और भी दृढ़ करने के लिये और उस निश्चय को कार्य का रूप दिलवाने के लिये जाइये न यहां से ! अभी मार्ग और टेलीफोन बचे हुये हैं। हमारे हाथ में मोटर लारियां हैं। सब सामान के साथ जाइये। यदि महारानी साहब का निश्चय फलीभूत हो गया तो हम एक सौ बयालीस सिपाहियों का मरना व्यर्थ नहीं जायगा। हिन्दुस्थान से हवाई बेड़ा और भूमि-सेना आवेगी। बख्तरी गाड़ियां और टैंक, तोपें, बम इत्यादि। (दांत पीसकर) फिर कबीलाइयों को आटा दाल का भाव मालूम पड़ेगा।

पार्वती—जनरल साहब, हम लोग आपके साथ काश्मीर के लिये अपना बलिदान करेंगी।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) क्या ! ओफ़ !! क्या कहती हो देवियो ? हम पुरुषों के जीतेजी स्त्रियां बलिदान होंगी !! यह नदी, यह निर्झर, ये हरे-भरे विशाल पेड़, ये रङ्ग-बिरंगे फूल, फलों से लदे हुये वे सेब के बाग़, धान के हरे-भरे खेत, उनमें काम करने वाले किसान-मज़दूर और

खेलने वाले बच्चे राख कर दिये जायें हम पुरुषों के जीतेजी !!! स्त्रियां बलिदान करेंगी, तब पुरुषों को धिक्कार है !!!! (टण्डक के साथ) और देखो डाक्टर, सिपाही तो थोड़े दिनों की क्वायद-परेड और छावनी की रपटा-रपटी में मारने-मरने योग्य बन जाता है परन्तु डाक्टर ? और नर्स ? ये तो थोड़े समय में नहीं बनाये जा सकते। नहीं। नही। आप लोगों को जाना ही होगा।

दोनों—हम लोग नही जायेंगी।

ब्रिगेडियर—मेरी आज्ञा है। आप आज्ञा का उल्लंघन करेंगी तो कोर्टमार्शल करके सज़ा दूँगा—(हँसकर) परिणाम एक ही—लारी में बन्द करके भेज दूँगा। (गम्भीर होकर) परन्तु एक उलझन हो जायगी। पहरे के लिये सिपाही भेजने पड़ेंगे। हम उतने कम हो जायेंगे और फिर जिन सिपाहियों ने सुरपुरी में मौत के साथ ब्याह करने की ठानी है, क्या वे जायेंगे ?

(टेलीफोन की घण्टी बजती है। ब्रिगेडियर फोन को हाथ में लेता है)

ब्रिगेडियर—हूँ। ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिंह। अच्छा, मेजर भीमसिंह टोली नम्बर दस की पहाड़ी से बोल रहे हो ? क्या हाल है ? हूँ—ओह ! कबीलाई पुल के पास आ गये थे ! हूँ—धड़ाका हमने भी सुना था। अच्छा। बहुत अच्छा। पीछे हटा दिये गये ! आप थोड़ी देर के लिये यहां आ जाइये। एक योजना बनानी है। क्या ? कबीलाइयों के पास टैंक भी हैं ? खैर, कोई बात नहीं। उनका हर हालत में मुक़ाबिला करना है। क्या ? हूं।—हूं अभी नहीं आ सकते !—अरे नही इतनी जल्दी प्राण मत दो भाई। कबीलाइयों और उनके पाकिस्तानी हिमायतियों से बहुत-बहुत क़ीमत वसूल करके तब प्राण देगे।—हुं—तुम नहीं आ सकते तो मैं आता हूँ। नये मोर्चों को देखना चाहता हूँ।

(टेलीफोन रख देता है)

पार्वती—आप कहाँ जा रहे हैं ?

ब्रिगेडियर—(हँसकर) चिन्ता मत करिए। अभी घड़ी नहीं आई है, परन्तु दस-पांच घण्टे के भीतर आयगी। मै मेजर भीमसिंह के पास जा रहा हूँ। श्रीनगर से फ़ोन पर कोई बुलावा आवे तो आप बातचीत करना और मुझको टोली नम्बर दस से बुला लेना।

(जाता है)

गौरी—इनके निश्चय की दृढ़ता में कोई सन्देह नही जान पड़ता, पार्वती।

पार्वती—परन्तु हम लोग इनको बिना किसी अस्पताली सहायता के यों ही छोड़कर नहीं जायँगी, गौरी। हम लोग उनके निश्चय की परवाह नही करेंगी।

गौरी—मैं ब्रिगेडियर के दूसरे निश्चय की बात कह रही हूँ पार्वती। उन्होंने आत्म-बलिदान का निश्चय कर लिया है। उनको बचाना चाहिए। जनरल में साधारण सैनिक जैसा दुस्साहस नही होना चाहिए।

पार्वती—मैं भी यही कहती हूँ—सेनानायक ने यदि अपने को समाप्त कर दिया तो सेना का संचालन कौन करेगा ? पर यहां पर स्थिति ही दूसरी है।

गौरी—काश्मीर मे बारह हजार की गिनती में सेना है, परन्तु नासमझ दीवान ने या विकट स्थिति ने इसे सेना के खण्ड-खण्ड करके गलत जगहों पर इधर-उधर भेज दिया है।

पार्वती—दीवान को तो महाराज ने हटा दिया है परन्तु सेनाओं के खण्ड अब इधरे-बिखरे अड्डों पर से यहां नही लाये जा सकते। मैं सोचती हूं दीवान को नासमझ बनने ही क्यों दिया गया ? कम से कम एक महीने से भारत सरकार प्रबोधन कर रही है। पाकिस्तानी शासकों ने लाहौर में अफ्रीदियों के सरदारों को बुलाकर पन्द्रह हजार कबीलाइयों की सेना सङ्गठित करने की योजना बनाई, तब भारत सरकार ने महाराज

को मुख्य सूचना देदी; जब राज्य के कुछ कर्मचारियों ने राजद्रोह और देशद्रोह करके काश्मीर को भारत से काटकर अनजाने प्रवाह में फेक-बहा देने का षड्यन्त्र रचा, तब सूचना देदी—

गौरी – कबीलाई तथा पाकिस्तान के सीमाप्रांत निवासी सहस्रों की संख्या में जो तीन महीने से बराबर हमारे काश्मीर की केसर-क्यारियों में सांप की तरह घुसते चले आ रहे है वह भी शासक वर्ग को तुरन्त सचेत न कर सका !!! सब जानते हुये भी, समझते हुये भी।

पार्वती – गौरी इस सुन्दर भूमि का कुछ दुर्भाग्य है। महाराज अभी तक निर्णय नही कर पा रहे है कि पाकिस्तान मे मिलें या हिन्दुस्तान में अथवा स्वतन्त्र बने रहे।

गौरी—स्वतन्त्र ! धनबल और जनबल के हिसाब से काश्मीर बहुत छोटा सा प्रदेश है। उसका सुहावनापन सदा से लुटेरों और हत्यारों को न्योता देता आया है।

पार्वती—इस युग में कोई भी देश अकेला पड़ जाने की मूर्खता नहीं कर सकता। काश्मीर की सीमा से अफ़ग़ानिस्तान, रूस, चीन और तिब्बत लगे हुये हैं।

गौरी—और लुटेरों तथा हत्यारों को रास्ता देनेवाला पाकिस्तान भी।

पार्वती—वह बगली घूंसा और छाती का कांटा तो सैकड़ों मील की लम्बाई तक काश्मीर की सीमा से लगा हुआ है।

गौरी—पाकिस्तान और हिन्दुस्तान शायद फिर कभी एक हो जायें।

पार्वती—गौरी, यह अपने को धोखा देने वालों का स्वप्न है। हिन्दुस्तान तो पाकिस्तान का मित्र बन कर रहना चाहता है परन्तु पाकिस्तान उस तरह का बर्ताव कर रहा है जैसा हिलते हुये दांतों वाली कोई बुढ़िया ओठो से काटखाने का प्रयत्न करे। एक कैसे हो सकते हैं ये दोनों ?

गौरी—इस पर भी महाराज, अभी तक तै नहीं कर पाये हैं कि क्या करें ?

पार्वती—सीधी तो बात है। पाकिस्तानियों ने कह दिया कि राजाओं और नवाबों को अबाध अधिकार है कि वे चाहें कुछ करें, जनता के मत की कोई परवाह नहीं। भारत का कहना है कि राजाओं के अधिकार का उद्गम जनमत है। काश्मीर का शासन जन-मत के नेताओं को कैदखाने में डाले है; भारत के साथ शामिल होने की जो एकमात्र शर्त है उसको मानता नहीं। इसीलिये सब ढुलमुलपन है।

गौरी—इधर पाकिस्तान ने काश्मीर को दबोचने में कोई भी कसर नहीं लगाई है। राज्य में बागियों का एक दल खड़ा कर दिया है—पहला कदम पाकिस्तान में शामिल होना। दूसरा राजा को गद्दी से उतार कर अलग कर देना और तीसरा पाकिस्तान के भुक्खड़ों तथा सरहद्दी लुटेरों और हत्यारों से काश्मीर और जम्बू के हरे भरे मैदानों को भर देना। फिर भारत के ऊपर निरन्तर आक्रमण करते कराते रहना।

पार्वती—ओफ़ ! गौरी, तुम श्रीनगर को फ़ोन करो। महारानी साहब से बात करो। उनसे कहो कि स्थिति भयंकर है, वे महाराज को भारत के साथ मिल जाने के लिये विवश करें. एक एक क्षण महत्व का है। करो फ़ोन।

(गौरी फोन करती है परन्तु कोई उत्तर नहीं मिलता)

गौरी - पार्वती, फोन पर तो कोई बोलता ही नहीं। जान पड़ता है किसी ने फोन का तार कहीं बीच से काट दिया हैं।

पार्वती—ऐं ! अब क्या होगा ? ब्रिगेडियर ठीक कहते थे, गौरी—हम सबको मारने और मरने के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

गौरी—पार्वती, उतावली मत होओ। मेरी एक बात सुनो। तुम तुरन्त श्रीनगर जाओ। अभी थोड़ा-सा समय है। श्रीनगर यहां से लगभग पचवन मील है। दो तीन घण्टे में पहुंच जाओगी। महारानी साहब से

कहना कि उनकी डाक्टर गौरी देवी मरते समय प्रार्थना कर गई है कि महाराज तुरन्त दिल्ली जायें। भारतसंघ में शामिल हो जायँ। वे हिन्दुस्थानी सेना की सहायता लें; फिर जैसे ही हवाई गाड़ियों के बम-मार बारामूला, उड़ी, कोहाला और नमला पर उड़े कि कबीलाइयों और उनके हिमातियों के देवता कूच कर जायेंगे।

पार्वती—मैंने धीरज के साथ तुम्हारी बात को सुन लिया गौरी। मैं यहां से नहीं जाऊँगी, चाहे पृथ्वी इधर की उधर हो जाय और चाहे कोर्टमार्शल का बाप मेरे सिर पर बिठला दिया जाय। महारानी साहब के पास तुम्हारी पहुँच है। तुम्हीं जाओ।

गौरी—तुम यहां अकेली क्या करोगी पार्वती? इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे अफसरों और सिपाहियों ने अपने सिरों पर कफ़न बांध लिये हैं। उनको अब किसी डाक्टर, नर्स या दवा की ज़रूरत नहीं।

पार्वती—मैं अकेली !! (हँसकर) अकेली नहीं हूँ और न रहूँगी। मेरे साथ में सीता, सावित्री, गौरी, झांसी की रानी और अनेक देवियां होंगीं। विश्वास रक्खो, मैं बहुत से लुटेरों को बन्दूक के घाट उतारूँगी।

गौरी—(घबराकर) और यदि तुम पकड़ी गईं तो?

पार्वती—वाह गौरी! वाह!! क्या हिन्दू नारी को यह भी सिखलाने की ज़रूरत है कि वह ऐसी अवस्था में क्या करे? (रिवाल्वर निकालकर) मेरा यह तमञ्चा रणक्षेत्र में सदा साथ रहता है। एक गोली छोड़ूँगी आक्रमणकारी के ऊपर और दूसरी छोड़ूँगी अपनी कनपटी पर।

(फोन की घण्टी बजती है)

गौरी—(प्रसन्न होकर) वह भ्रम ग़लत था। श्रीनगर से समाचार आ रहा है। सुनूँ क्या बात है। (फोन को कान से लगाती है) जी—मैं हूं डाक्टर गौरी देवी। आप श्रीनगर से बोल रहे हैं? क्या? टोली नम्बर दस से? हूं—हां—आप—आप? ब्रिगेडियर जनरल साहब?

अच्छा। हूँ—श्रीनगर से कोई समाचार नहीं आ रहा है। जब आपने खटखटाया तो मै समझी थी कि श्रीनगर से कोई बोल रहा है ... जी नहीं...मालूम होता है कि श्रीनगर में या तो टेलीफोन एक्सचेञ्ज पर कोई है नहीं, या शायद बीच में से किसी ने तार काट दिया है। जी ?— हूँ— मैंने विचार बदल दिया है। श्रीनगर जाने के लिये तैयार हूं। जी ? अच्छा आप आ रहे है। मै तैयार होती हूं जाने के लिये।

(टेलीफोन रख देती है)

गौरी—पार्वती, तुमको अकेली छोड़कर मेरा जी उमेंठ सी खा रहा है। केसरिया काश्मीर उसी के फूलों के रक्त से सजोया जायगा ! पार्वती, (गद्गद् होकर) मैं अकेली नहीं जाना चाहती।

पार्वती—तुम असल में डरती हो। डरपोक हो ही !!

गौरी—(तिनक कर) मैं डरपोक हूं ! (तमन्चे पर हाथ रखकर) मेरे पास तमन्चा है और उसका उपयोग भी जानती हूं।

पार्वती—(मुस्कराकर) तब मुझको यहां अकेली समझने की भूल मत करो।

गौरी—अच्छा। अच्छा। पार्वती, मुझको आशा है कि भारत से सेना हम लोगों की सहायता और रक्षा के लिये आवेगी।

पार्वती—आवे, चाहे न आवे, मेरे निश्चय में अन्तर नहीं पड़ने का। काश्मीर की रक्षा करने में भारत अपनी ही तो रक्षा करेगा।

गौरी—जैसे अंग्रेज़ लोग सीमांत की रक्षा करके अपने सम्पूर्ण अधिकार की रक्षा करते थे। वे तो कबीलियों को रुपया पैसा भी दिया करते थे। लाखो रुपये साल, कई लाख रुपये हर साल !

पार्वती—(कुढ़कर) सांपों को दूध पिलाते थे सांपों को दूध। उससे क्या उसका ज़हर कभी कम हुआ ? लुटेरो और हत्यारों को मधुपर्क पिलाने का आदर नहीं मिलना चाहिये। उनको तो गोलिया और बम खिलाना चाहिये। तब कहीं वे अपने पिशाचपने से कुण्ठित हो सकते हैं।

गौरी—भारतीय सेना उनका यही सत्कार करेगी।

पार्वती—(उदास स्वर में) गौरी, शायद ऐसा हो सके। परन्तु भारत भी तो बहुत समृद्ध देश नहीं है। और काश्मीर का यह कांटा अनन्तकाल के लिये है। भारत की गांठ में युद्ध के जो साधन हैं, वे परमित हैं।

गौरी—भारत के साधन चाहे परमित हों। पर उसके उत्साह की कोई हद नहीं और जैसे पानी के बादलों में से बिजली उत्पन्न हो जाती है उसी तरह भारत का सुदर्शन चक्र वज्रों की भी वर्षा कर सकता है।

पार्वती—यह ठीक है गौरी परन्तु काश्मीरियों को स्वयं भी तैयार होना चाहिये।

गौरी—काश्मीर के दो दल आपस के झगड़ों के कारण उन्नति के अवरोधक है।

पार्वती—एक दल लुटेरों से जा मिला है। इसी दल के समर्थक मुसलमान सिपाही काश्मीर की सेना में थे जो देश-द्रोह, राज-द्रोह और धर्म-द्रोह करके लुटेरों में शामिल हो गये।

गौरी—परन्तु एक दल तो मुसलमानों का ऐसा है जो काश्मीर भक्त है।

पार्वती—उस दल में बहुत से हिन्दू भी है परन्तु उनके नेता क़ैद-खाने में पड़े है। गौरी, मै तुमसे अनुरोध करती हूँ · महारानी साहब से प्रार्थना करना अवसर मिले तो महाराज से भी विनती करना कि इस दल के नेताओं को छुटकारा दे दें और शासन में उनको घुला मिला ले।

गौरी—महारानी साहब की राय पहले से ही स्पष्ट थी।

पार्वती—गौरी जहां विवेकमय शक्ति नहीं, वहां कष्ट और विनाश के सिवाय और कोई परिणाम नही हो सकता। सारे देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिये।

गौरी—हां पार्वती। मैं जाकर महारानी साहब से यह भी कहूँगी कि कैदखानों में पड़े हुये देश-भक्तों को छुटकारा दिलवावें, उनको शासन में अधिकार दें और भारतीय संघ में काश्मीर को मिलवा दें तथा काश्मीरी स्त्री पुरुषों को हथियार देकर आक्रमण करने और अपनी रक्षा करने के योग्य बनावें।

पार्वती—स्त्रियों को मारने के लिये और मरने के लिये तैयार करें, वे स्वयं उनका नेतृत्व करें, महारानी साहब स्वयं। समझी गौरी ?

गौरी—अवश्य, मैं स्वयं इस काम को पूरी लगन के साथ करूँगी। कहीं तुम भी मेरे साथ होतीं पार्वती ?

पार्वती—फिर वही मोह ? झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का हाल हमने तुमने पढा है। वे वीर थीं और गीता की भक्त। वे कभी मोह में नहीं पड़ी।

गौरी—हां, पार्वती—हम सब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बनने का उद्योग करेंगी। नागिनें बनकर अत्याचारी आक्रमणकारियों को डसेंगी, विश्वास रक्खो। संसार भर हमारे वीर कर्म और त्याग धर्म को देखेगा और हमारी पुकार को सुनेगा।

पार्वती—सुनेगा। पर हर हालत में हमारा कर्तव्य निश्चित है। (नेपथ्य में आहट पाकर) शायद ब्रिगेडियर जनरल साहब आ रहे हैं।

(ब्रि० राजेन्द्रसिंह और मेजर भीमसिंह का प्रवेश। मेजर भीमसिंह अधेड़ अवस्था का सतर्क और छरेरा सैनिक है। वह पार्वती और गौरी का अभिवादन करता है। दोनों बैठ जाते है। थके हुये से हैं परन्तु उनकी आखों में तेज और निश्चय है)

ब्रिगेडियर—आप जा रही है डाक्टर गौरी—ठीक है। और आप भी डाक्टर पार्वती ?

पार्वती—जी नही।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) कोर्ट मार्शल करूँगा आपका ;

पार्वती – या पोस्ट मार्टम* ? (हँसती है)

ब्रिगेडियर—(गम्भीर होकर) मरने की भावना रखने वालों का अन्तर कितनी जल्दी मिट जाता है ! (मुस्कराकट) शायद पोस्ट मारटम किसी का भी न होगा।

गौरी – मै चाहती हूं कि मैं भी इसी रण-क्षेत्र में प्राण देती।

पार्वती—श्रीनगर जाकर जो अत्यन्त जरूरी काम करने है उनका मानो तुम्हारे सामने कोई महत्व ही नहीं। मरने की तो असमर्थ और निहत्थे ठाना करते हैं। मै तो यहां मारने के लिये रुक रही हूं।

ब्रिगेडियर—हमारे शासकों से निवेदन करना डाक्टर गौरी कि काश्मीर या हिन्दुस्थान शांति के समय की ढीली ढाली आदतों से नहीं बचाया जा सकता। तीव्र और प्रबल उपाय काम में लाये बिना किसी की भी कुशल नहीं।

मेजर भीमसिंह—इस ओर रुझान किसी का भी नजर नहीं आता। हमारे उच्च और उदार नेता हिटलर की तरह के निष्ठुर और स्वार्थमग्न लोगों के लिये जरूरत से ज्यादा भले है। रंगे सियारों को समझा बुझा कर उनकी राय बदलने की कोशिश करना बेकार है।

ब्रिगेडियर – ठीक है। एक समय था जब देश-द्रोही दुश्मनों की लल्लो चप्पो करने के लिये कुछ कारण भी था, परन्तु अब शांति और सान्त्वना तथा प्रसन्न करने की नीति से सिवाय नुकसान के और कोई परिणाम न होगा। महाराज जनता के नायकों को अपने साथ लें और अपनी जनता के होकर रहें। कह देना कि मरने के पहले उनके सारे सिपाहियों की यही पुकार थी।

पार्वती—मै इनको यह सब समझा चुकी हूं।

ब्रिगेडियर – (अनसुनी सी करके) मुस्लिम कान्फ्रेंस और उनके नेताओं की खुशामद बन्द करदें। इन्हीं लोगों ने हमारी सेना के मुसलमान

---

*शव–परीक्षा।

सिपाहियों को बरगलाया और उनसे बेईमानी करवाकर आक्रमणकारियों के पक्ष में मिलवाया। ये हैं थोड़े से ही परन्तु बर्बर और धर्म हीन हैं। महाराज शेख अब्दुल्ला का सहयोग प्राप्त करें जो जनता का सही नेतृत्व कर सकते है।

गौरी—मैं भूलूंगी नहीं।

मेजर भीमसिंह—मीर मकबूल शेरवानी का भी नाम न भूलना। वह प्राणवान देश-भक्त काश्मीर के लिये हर तरह की कुरबानी कर सकता है।

ब्रिगेडियर—हाँ, हाँ, अवश्य। वह काश्मीर का होनहार सपूत है। आह! उस तरह के यदि और बहुत से होते।

पार्वती—और यदि हमारे सब नेता कुछ दूसरे प्रकार से भी बातों को सोचते?

ब्रिगेडियर—(सोचते हुये) हाँ...ऊँ...

पार्वती—जनरल साहब, अधिकांश मनुष्यों का एक कान कच्चा होता है और दूसरा पक्का।

ब्रिगेडियर—(बिचार से चौकता सा) यह समय शरीर विज्ञान और पोस्ट मारटम की चर्चा नही है देवी।

पार्वती—सुनिये जनरल साहब, तुम भी ध्यान में रखना गौरी—हमारे अनेक नेताओं का भी एक कान कच्चा और एक पक्का होता है। साधारण मनुष्यों से थोड़ा सा और ज्यादा, पक्के कान का द्वार बन्द और कच्चे का खुला हुआ।

गौरी—पार्वती, यह सब क्या कह रही हो? मैंने तो मारने-मरने की ठानी थी, पर मेरे दिमाग में तो ऐसी कोई अण्डबण्ड बात नही उठी। जनरल साहब की अमरपुरी और मौत वाली बात तो समझ में आ गई पर तुम यह किस शास्त्र की चर्चा कर उठी हो?

मेजर भीमसिंह—अमरपुरी जाने के क्षण के लिये अब बहुत देर नहीं है, इसलिये इन्हें भी कुछ कह डालने दो। डाक्टर पार्वतीदेवी, कुछ और रह गया है क्या इनसे कहने के लिये ?

ब्रिगेडियर—हाँ अब डाक्टर गौरी, यह स्थान शीघ्र ही छोड़ना चाहिये। शीघ्र ही ?

पार्वती—सुनिये आप दोनों, न उस समय आपके चित्त में कोई विकार था और न मेरे चित्त में इस समय है। मैं जो मरने जा रही हूँ, उसकी एक बात नेताओं के कान तक पहुंचनी चाहिये।

गौरी—अवश्य।
ब्रिगेडियर और मेजर—क्या ? } [एक साथ]

पार्वती—कि, हमारे बड़े लोग कच्चे और पक्के कान का ठीक-ठीक उपयोग किया करें।

गौरी—हूँ !
पार्वती—हूँ !! हुँ क्या ?

गौरी—कच्चे और पक्के कान, और, न जाने क्या-क्या। (पिघल कर) पार्वती अब भी निश्चय को बदल दो। हम दोनों श्रीनगर चलकर बहुत बड़ी देश-सेवा कर सकेंगी। चलो न बहिन ?

पार्वती—बात सुनो। नेताओं के कानों में भली और बुरी, ग़लत और सही सब तरह की बातें पड़ती हैं। रंगे सियारों की चिकनी-चुपड़ी ग़लत बातों को वे कच्चे कान की राह से हृदय में उतार लेते है और उसको सच्चा मान लेते हैं; तथा सचेत और सावधान करने वालों की मीठी-कड़वी परन्तु उचित और सही बातों को पक्के कान के बन्द द्वार के भीतर नही जाने देते।

ब्रिगेडियर—परेशान है विचारे क्या करें ? मेजर !
मेजर—हाँ—जी—(अङ्गड़ाई लेता है)

पार्वती—क्यों नहीं करें ? स्वार्थियों की ग़लत-सलत बातों और रंगे सियारों के चिकने-चुपड़े ढोंगों और ढकोसलों को कच्चे कान के मार्ग से हृदय में न बैठने दें। यह मार्ग केवल सचेत और सावधान करने वालों के लिये खुला छोड़ दें; पक्के कान का बन्द द्वार ग़लत बातों के लिये है जहां वे टकराती रहें, भनभनाती रहें और अन्त में वहीं हमाप्त होती रहें।

ब्रिगेडियर—हाँ।

मेजर—मैं भी समझ गया।

गौरी—बहिन पार्वती, बात पहले कुछ अटपटी जान पड़ी थी। अब समझ गई। जिससे कहना है वहां तक पहुंचना मेरे लिये कठिन है परन्तु उनके कानों तक पहुंचाये बिना नहीं रहूंगी।

(नेपथ्य में आहट होती है। चारों सतर्क हो जाते हैं)

(अर्दली घबराया हुआ आता है)

अर्दली—(हड़बड़ी के साथ) जनरल साहब, एक दुश्मन हमारे अड्डों में होकर घुस आया था। वह पकड़ लिया गया है परन्तु पकड़े जाने के पहले उसने हमारे एक सिपाही को घायल कर दिया है।

(जनरल खड़ा हो जाता हैं। पार्वती और गौरी तमन्चे निकाल लेती हैं)

ब्रिगेडियर—हमारे सिपाही को घायल कर दिया है ! उसको गोली से तुरन्त उड़ा दो।

(अर्दली गमनोद्यत होता है)

ब्रिगेडियर—ठहरो अर्दली। पहले उससे कुछ सवाल करेंगे। उसको लाओ।

मेजर—यह पुल पर से आ कैसे गया ? इतनी चांदनी रात में !! इतने सतर्क अड्डों में होकर !!!

ब्रिगेडियर—और शायद पुल पर ही से अगर एक दुश्मन आ-सकता है तो वे सब के सब भी आ सकते हैं। हजारों की संख्या में। कल ईद का त्यौहार है। वे श्रीनगर में ईद मनाने की घोषणा कर चुके है। मेजर, आज रात, बस आज की ही रात, समझ गये न? पार्वती! गौरी!! तुम दोनों श्रीनगर जाओ। हम लोगों के जीते जी यदि हमारी दो काश्मीरी संगिनी मारी गईं तो हमको मरने के समय व्यथा होगी।

पार्वती—दो नही केवल एक। ब्रिगेडियर, वह क्षण तो आपके आनन्द का होना चाहिये, क्योंकि अब आपकी बहिनें मरने की अपेक्षा मारना बहुत अच्छी तरह सीख रही है।

ब्रिगेडियर—ओफ़! न मालूम वह दिन कब आयगा अभी तो थोड़ी ही—

[अर्दली एक कैदी को लेकर आता है। वह कैदी पठानी वेश में है परन्तु उसकी दाढ़ी-मूछ साफ़ है। उसका सलवार खाकी है और कुर्ता साफा इत्यादि हरे रङ्ग के। अर्दली उसकी बग़ल में बन्दूक तानकर खड़ा हो जाता है। कैदी घबराया हुआ है उन दोनों स्त्रियों को उत्सुकता के साथ एक क्षण देखकर आख नीचे कर लेता है। ब्रिगेडियर जेब में से नोटबुक और झरनी (फाउन्टेनपेन) निकाल लेता है।]

ब्रिगेडियर—कैदी, दोनों देवियां कप्तान पद की डाक्टर है और ये मेजर है, मेजर भीमसिह। जो कुछ पूछा जाय सही जबाव देना। सच बोलने से कुछ रियायत पा सकोगे, अन्यथा गोली तुम्हारे खोपड़े को फोड़ कर प्राणों को तुम्हारे ऊजड़ पहाड़ी इलाके में आराम के साथ पहुंचा देगी समझ गये।

कैदी—जी—हां—जी—ई—

ब्रिगेडियर—अपना नाम पता इत्यादि बतलाओ।

कैदी—नाम गुलाम जीलानी रहने वाला ज़िला हज़ारा। बाप का नाम नुहम्मद कयूम जो एडीटर 'लड़ाई-भिड़ाई' अखबार के हैं।

ब्रिगेडियर—मेजर, आप लिखिये इनकी कहानी को, मैं सवाल करूँगा। केवल थोड़े से नोट लेता जाऊँगा।

मेजर भीमसिंह—जो आज्ञा।

(मेजर भीमसिंह नोटबुक और झरनी ले लेता है)

ब्रिगेडियर—तुम खुद क्या काम करते हो? कुछ पढ़े-लिखे हो?

कैदी—जी हाँ! (गर्दन ऊँची करके) मैं एम० ए० हूं। अलीगढ़ यूनीवर्सिटी से पास किया था। सरहद्दी सूबे में सरकारी पुलिस का इन्सपेक्टर हूँ।

ब्रिगेडियर—अच्छा जी! मैं ब्रिगेडियर जनरल हूं, मेजर साहब एम० ए० हैं और ये दोनों देवियां एम० बी० बी० एस० हैं, इसलिये तुम्हारी बात समझने में हम लोगों को कोई उलझन नहीं पड़ेगी। और न तुम्हारा सिर चकनाचूर करने में भी यदि तुमने हमारे सवालों का ठीक उत्तर न दिया तो (कैदी सिर नीचा कर लेता है)

कैदी—मैं क्या बतलाऊँ—कुछ नहीं जानता।

ब्रिगेडियर—बांधो इसके हाथ पीछे से अर्दली। (अर्दली भीमसिंह की सहायता से उसके हाथ बांध देता है) ले जाओ इनको बाहर और उड़ा दो गोली से।

(अर्दली गननोद्यत)

कैदी—हुजूर। जनरल साहब। बेकसूर हूँ। यों ही इस झमेले में फँस गया। बिलकुल यों ही।

ब्रिगेडियर—(कड़ाई के साथ) यहां किसी की जियारत करने या किसी दावत में शामिल होने के लिये आया था।

कैदी—(भयकंपित) नहीं जनरल साहब। जो कुछ मैं जानता हूं, सब सही-सही और पूरा-पूरा बतलाऊंगा।

ब्रिगेडियर—हां—यदि खोपड़े के टुकड़े-टुकड़े नहीं कराना चाहते हो तो बतलाओ।

कैदी—जरूर, सरकार, सरकार।

ब्रिगेडियर—कुल कितने आदमी हो? प्रधान छावनी कहां हैं? हथियार किस किस्म के हैं? कहां से मिले? इस उपद्रव की जड़ में क्या है और कौन है? तुम लोगों ने कहां कहां क्या-क्या किया है? आगे क्या करने जा रहे हो और क्यों?

कैदी—ब्रिगेडियर जनरल साहब, सारा फसाद आजाद काश्मीर सरकार का उठाया हुआ है। पठान जो काश्मीर में घुसते चले आ रहे है उनको पाकिस्तान रोकने की ताकत नही रखता—

ब्रिगेडियर—मैंने यह नहीं पूछा। होश के साथ बात करो। जो पूछा उसको बतलाओ।

कैदी—हुजूर, वही तो कह रहा हूँ—वही—

ब्रिगेडियर—तब सीधे तौर पर सब बतलाते जाओ। प्राणों की चिन्ता हो तो। समझे?

कैदी—शुरू में हमला बाहर से नही हुआ। आग पहले भीतर ही सुलगी। फिर पठान आये। अब हम लोग सब मिला कर पचास हजार आदमी है जो पल्टनों में बटे हुये हैं। गिलगिट, एबटाबाद, रावलपिंडी कोहाला और स्यालकोट के रास्तों से तोपें, मशीनगनें, मोटरें वगैरह मौजूदा वक्त के हथियार लाये हैं। थोड़े दिनों में दो तीन लाख हो जायेंगे।

गौरी—इस पर भी कहता है कि हमला बाहर से नहीं हुआ है।

कैदी—जी—ई क्या करूँ हमको यही जवाब सिखलाया गया है।

पार्वती—सिर को बचाना चाहे तो सब सच-सच कहता जा।

कैदी—जी—ई—

ब्रिगेडियर—हूं—इन पल्टनों के आने के पहले और कोई लोग आये ?

कैदी—जी ? जी। (चुप रह जाता है)

ब्रिगेडियर—(कड़ाई के साथ) बोलो ब्योरे के साथ बतलाओ—ये आने वाले कौन हैं ? कहां से आये ? पूरी और सही बात बतलाने पर ही कुछ रियायत पा सकोगे।

कैदी—हां जी। (खांसकर गला साफ़ करता है)

ब्रिगेडियर—(कड़ककर) बयान करो।

कैदी—कई हज़ार कबीलाई पठान कई महीने पहले से काश्मीर में घुसा दिये गये थे।

ब्रिगेडियर—क्यों ? आखिर क्यों ?

कैदी—बतलाता हूं हुजूर। (जल्दी जल्दी) अंग्रेज सरकार कबीलाईयों सरहद्दी पठानों को गुज़र बसर या रिश्वत के तौर पर लाखों रुपया साल देती रही है। पाकिस्तानी सरकार यह रुपया नहीं देना चाहती। एक वजह यह है हमला करने की। दूसरी—अगर काश्मीर हिन्दुस्तान में जा मिला तो रूसी इलाके के साथ हिन्दुस्थान सरकार का नाता सीधा जुड़ जायगा; अफगानिस्तान और चीन पड़ौसी बन जायेंगे—

मेजर—जल्दी मत करो ज़रा धीमे बोलो।

कैदी—जी। बीच एशिया पर हिन्दुस्थान का असर किलिक और कराकुरुम दर्रों में होकर बिलकुल सीधा पड़ उठेगा।

गौरी—इसको पाकिस्तान अहना इजारा बनाना चाहता है।

ब्रिगेडियर—(मुलायम पड़कर) क्या बारीक राजनीति की ये बातें बेपढ़े कबीलाई वग़ैरह समझते हैं ?

कैदी—जी नहीं। वे लोग सिर्फ एक लफ्ज की आवाज सुन चुके हैं यानी पठानिस्तान की, आजाद पठानिस्तान की,। पाकिस्तान नहीं चाहता कि यह ख्याल कभी भी कामयाब हो।

पार्वती—क्यों ?

कैदी—क्यों कि पठानिस्तान के अगुआ लोग रूस या हिन्दुस्थान से जा मिलेंगे और इससे पाकिस्तान को नुकसान होगा ।

पार्वती—काश्मीर में लूटमार करने का क्या कारण है ?

कैदी—कबिलाइयों का ध्यान काश्मीर की तरफ़ मोड़ दिया गया है, क्योंकि लूटमार उनको पठानिस्तान के ख्याल से भी ज्यादा प्यारी है, क्योंकि इस जरिये से नये नये रङ्गरूट मिलते हैं ।

ब्रिगेडियर—हथियार वग़ैरह कहाँ से मिले ?

गौरी—मोटरें कहाँ से आईं ? पैट्रोल किसने दिया ?

कैदी—मुसलिम लीग की सरकार और अफ़सरों से ।

ब्रिगेडियर—लड़ाई की हिक़मतें कौन बनाता है ?

कैदी—आज़ाद हिन्द फ़ौज, और सरकारी फ़ौज के छुट्टी लिये हुये अफ़सर, मगर बुनियादी नकशे पाकिस्तान के अफ़सर तैयार करते हैं ।

पार्वती—लूटमार करने में रियासती सिपाहियों का भी हाथ है ?

कैदी—जी हाँ । लूटमार का पेशा करने वाले फ़िर्कों के हज़ारों आदमियों में वे लोग शामिल हो गये है ।

ब्रिगेडियर—इस हमले में अङ्गरेज़ों का भी कुछ हाथ है ?

कैदी—हुज़ूर है । सरहदी सूबे का गवर्नर जब बरसात के शुरू में छुट्टी लेकर काश्मीर आया अब 'आज़ाद काश्मीर सरकार' के बीज उसी ने बोये हमले की साज़िस में वह शरीक़ है । इङ्गलैण्ड हिन्दुस्थान को रूस का दोस्त नहीं बनने देना चाहता जो कि वह काश्मीर के रास्ते से बन जायगा ।

ब्रिगेडियर—यहां की मुसलमानी जनता के साथ पठानों को कोई हमदर्दी है ?

क़ैदी—क़तई नहीं जनरल साहब। जब पठान काश्मीर और जम्मू के मैदानों और घाटियों में भर जायेंगे तब यहां के रहने वालों को पठानों की हकूमत और मर्ज़ी पर चलना होगा।

पार्वती—इस पर भी कहते हैं कि काश्मीरी मुसलमानों को आज़ाद करने के लिये आ रहे है !

क़ैदी— वे तो काश्मीरी मुसलमानों को काफ़िर, बजाद और हैच समझते है।

ब्रिगेडियर—हुं—काश्मीर को बर्बाद करने के बाद फिर क्या करने की योजना है ?

क़ैदी—फिर हिन्दुस्थान के लीगी मुसलमानों की मदद से हिन्दुस्थान को अपनी हकूमत में लाने की फ़ितरत है। क्योंकि हिन्दुस्थान को एक पुरानी बीमार हाथी की मिसाल दी जाती है, जो एक ज़माने से आज़ादी के साथ चलने-फिरने क़ाबिल तक नहीं है।

ब्रिगेडियर—यह गुस्ताख़ी !

क़ैदी— (भय कँपित) हुज़ूर, यह मेरा खुद का ख्याल नहीं है।

ब्रिगेडियर—तुम्हारी निज की बात नहीं पूछी जा रही है।

पार्वती—हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली की शक्ति को नहीं जानते वे लोग ?

क़ैदी—हुज़ूर हिन्दुस्थान की ऐसेम्बली ने तै कर लिया है कि उसका रङ्ग-रूप सोशलिस्ट रिपबलिक का होगा। पाकिस्तान के नवाब और ज़मीदार सोशलिस्टों और कम्यूनिस्टों में कोई भेद नहीं जानते। ऐसेम्बली का उनको कोई डर नहीं। वे उससे नफ़रत करते हैं।

गौरी—नफ़रत तो उनका चाय-पानी, रोटी-शर्बत और आराम तक है।

ब्रिगेडियर—हूं—हिन्दुस्थानी फ़ौज का कोई डर नहीं है, तुम लोगों के गिरोहों को ?

क़ैदी—कुछ खौफ़ है सरकार। मगर काश्मीर के पहाड़, नदी-नाले जङ्गल और बर्फ़ीले तूफान हिन्दुस्थानी फ़ौज को बहुत अर्से तक काम नहीं देंगे। तब तक कबीलाई सारी रियासत को कब्जे में कर लेंगे।

ब्रिगेडियर—हवाई बेड़े का भी डर नहीं है ?

क़ैदी—बहुत डर नहीं है हुज़ूर, क्योंकि ज़रूरत पड़ने पर पाकिस्तान कबीलाइयों को हवाई जहाज भी देगा।

ब्रिगेडियर—ओफ़ ! यह शरारत !!! पाकिस्तानी सरकार हवाई बेड़ा देगी, अपना सिर और अपनी जेब बिना टटोले ही ?

क़ैदी—सरकार, जेब का तो यह हाल है कि खजानों में चूहे डण्ड पेलते है। डाकखाने के टिकिटों, गोबर के कण्डों और अधजले सिगरेटों तक पर चोरबाज़ारी चलती है।

ब्रिगेडियर—हूँ—खैर, प्रधान छावनी कहां है ? कमान कौन कर रहा है।

क़ैदी—पलन्द्री और गिलगिट में खास-खास छावनियां हैं। कमान कर्नल रहमान कर रहा है।

ब्रिगेडियर—कर्नल रहमान ! जो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लिये आँसू बहाते-बहाते नहीं थकता था !! जिसकी जान कांग्रेस ने बचाई !!! खैर, तालीम कितने दिनों की है ? और कहां कहां हो रही है।

क़ैदी—कई महीनों से एबटाबाद, रावलपिण्डी और स्यालकोट में हो रही है।

ब्रिगेडियर—जनता को क्या कह कर बगलाया जाता है ?

क़ैदी—लोगों से यह कहा जाता है कि जिन टैक्सों और जुल्मों की चक्कियों में तुमको पीसा जा रहा है, उससे छुटकारा मिल जायगा और सब को बन्दूक़ वग़ैरह रखने का सुभीता हासिल हो जायगा।

ब्रिगेडियर—हूँ—अब यह बतलाओ कि तुमने कहाँ पर क्या-क्या किया है।

कैदी—(कांपकर) मैने तो कुछ नहीं किया, हुजूर। मैं तो मजहब की लड़ाई समझ कर शामिल हुआ था। और लोगों ने बड़े बड़े सितम ढाये हैं।

ब्रिगेडियर—उन्हीं लोगों की बात पूछी जा रही है।

कैदी—बिना किसी भेदभाव के हिन्दू और मुसलमानों को लूटा और मारा है। आगजनी से गांव के गांव खाक कर दिये हैं। औरतों और लड़कियों को पकड़ ले गये हैं। उनके साथ—

पार्वती—कहता जा, रुक मत, बेशर्मी के कीड़े !

कैदी—कहते नहीं बनता मुझसे। सैकड़ों हजारों के साथ बड़ी जबरदस्तियां की गई है। सैकड़ों मर गई। सैकड़ों को बाजारों में नीलाम किया गया। मुसलमान बच्चों को गुलाम बनाने के इरादे से कबीलाई इलाकों में भेज दिया गया है। लूट का माल ऊँटों, बकरों और गधों पर लाद लादकर भेजा जा रहा है।

गौरी—मुसलमानों को भी नहीं छोड़ा ?

कैदी—ज्यादा बस्ती, आबादी तो मुसलमानों की है। मसजिदों तक को उन्होंने नापाक किया। कुरान शरीफ की भी तौहीन की !

ब्रिगेडियर—तुम हमारी कतारों में कैसे आये ?

कैदी—पुल पर से पेट के बल रेंगता हुआ।

ब्रिगेडियर—तुमने हमारे सिपाही को घायल किया ?

कैदी—हुजूर उसको सौगन्ध धरवाकर पूछें। वह अपने ही जोर से टकरा कर घायल हुआ।

ब्रिगेडियर—मेजर इसके हाथ खोल दो (भीमसिंह उसके हाथ खोल देता है)

कैदी—(ऊपर हाथ फैलाकर) मेरी छाती के पास रिवाल्वर है। ब्रिगेडियर तुरंत उसके रिवाल्वर को झपटकर ले लेता है। पार्वती और गौरी

अपने अपने रिवाल्वर हाथ में ले लेती है) यह भरा हुआ है। मैं चाहता तो काम में ला सकता था।

ब्रिगेडियर—बेकार जाता, क्योंकि फिर तुम्हारी देह की धज्जियां उड़ाई जाती। तुम्हारे पास और क्या है? मेजर जेबों को देखो।

क़ैदी—इससे भी बढ़कर खतरनाक चीज। (पार्वती और गौरी रिवाल्वर तान लेती हैं। भीमसिंह को कैद सहज ही अपनी जेब से कुछ कागज निकाल लेने देता है)

मेजर—कुछ कागज़ हैं।

क़ैदी—इनका खतरा दूसरी तरह का है। (कागज़ मेज़ पर फैला लिये जाते हैं। गौरी एक कागज को हाथ में ले लेती है)

गौरी—इन कागज़ों का मतलब?

क़ैदी—इन कागजों में तस्वीरें हैं। मतलब जाहिर है। लाहौर में छापी गई हैं। इनमें दिखलाया गया है कि मुसलमानों पर हिन्दुओं और सिक्खों ने बेहिसाब और बेमिसाल जुल्म किये हैं।

पार्वती—बिलकुल झूठ।

ब्रिगेडियर—ये कहां-कहां बांटे गये हैं? और क्यों?

क़ैदी—काश्मीर, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान. ईराक, अरब, मिसिर सब जगह। इन मुल्कों से आदमी. हथियार और रुपया पाने की उम्मेद से।

पार्वती—मिसिर, अरब, ईराक और फिलिस्तीन को घर के झगड़ों से फुरसत मिल गई है?

ब्रिगेडियर—खैर—

गौरी—(अपने हाथ वाला कागज दिखाते हुये) इस कागज़ में क्या है?

मेजर—(कागज को देखकर) हूँ—हूँ—घोड़े पर सवार है!

पार्वती—कैदी यह है?
ब्रिगेडियर—यह क्या है? } (एक साथ)

कैदी—दो टापें हिन्दुस्थान के नक़शे में अरब समुद्र पर दिखलाई गई हैं और दो हिन्दुस्थान पर—यानी हिन्दुस्थान को रौंद कर पाकिस्तान उस पर हुकूमत करेगा।

ब्रिग्रेडियर—हुं—घोड़े पर सवार कौन है ?

कैदी—पाकिस्तान का जिन।

पार्वती—अच्छा !!! घर में नही हैं दाने अम्मा चली भुनाने !!!!

ब्रिग्रेडियर—अच्छा गुलाम जीलानी, पूर्वीय पंजाब पर हमला क्यों नहीं किया गया ?

कैदी—फिलहाल हमला करने से हिन्दुस्थानी फौज फौरन सिरतोड़ जवाब देती, मगर किसी वक्त होगा।

ब्रिग्रेडियर—और किसी तरफ से भी हिन्दुस्थान पर हमला करने का इरादा किया जा रहा है, कैदी ?

कैदी—हुजूर कह नहीं सकता। सुना हैं कि जैसलमेर, जोधपुर बगैरा को भी देखा जावेगा।

गौरी—हुँ—और हिन्दुस्थान चुप बैठा रहेगा।

ब्रिगेडियर—अच्छा कैदी,तुमको इसी समय श्रीनगर भेजा जा रहा है। यदि वहां किसी और पूछताछ की जरूरत पड़ी तो की जायगी। मैं यहां से सिफारिश लिख रहा हूं कि तुम्हारा प्राण न लिया जाय।

कैदी—हुजूर का हजार हजार शुक्रिया।

ब्रिगेडियर—अर्दली, कैदी को ले जाओ और बन्द रक्खो।

(अर्दली कैदी को ले जाता है। ब्रिगेडियर कुछ लिखता है और अपनी नोट-बुक में रख देता है। ब्रिगेडियर लिखे बयान को अपनी नोटबुक समेत गौरी को दे देता है।)

ब्रिगेडियर—आप श्रीनगर जाने के लिये तुरन्त तयार हो जाइये गौरी देवी। कैदी आपके पहरे में जायगा। रसद सामान और दबायें भी।

गौरी—मैं तैयार हूं। लारी में सामान रखने के लिये कुछ मिनट ही तो चाहिये।

ब्रिगेडियर—आप महारानी और महाराज तथा देशभर को समझा देना कि केवल कबीलाई लुटेरों का मुकाबला नहीं है, घरों में लोगों को बन्द करके जला डालने वालों का ही सामना नहीं है, बल्कि हिन्दुस्थान भर में आग लगाने की नियत रखने वालों का सामना है।

गौरी—मुझको मालूम है।

ब्रिगेडियर—यह आक्रमण शक्ति और तेजी पाकिस्तान से पा रहा है जो बेहद बेशर्मी और क्रूरता के साथ लुटेरों का सरपरस्त बन रहा है।

गौरी—इसमें कोई सन्देह नहीं।

ब्रिगेडियर—बतला देना कि इन लुटेरों के अत्याचारों की कोई मिसाल इतिहास में नही मिलेगी। सैकड़ों हजारों की संख्या में मुसलमान स्त्रियों और बच्चो को भी नहीं छोड़ा है। और (रुंधे गले से) हजारों की तादाद में हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया है। हे शंकर भगवान, इस बीसवीं सदी में यह सब !!

गौरी—यह क्या कभी भुलाया जा सकता है ?

ब्रिगेडियर—काश्मीर के हम थोड़े से सिपाही अकेले काश्मीर की लड़ाई नहीं लड़ रहे है, बल्कि सारे हिन्दुस्थान की लड़ रहे है। सबको पुकार-पुकार कर समझाना।

पार्वती—काश्मीर हिन्दुस्थान का भाग होकर रहेगा। काश्मीर के समझदार हिन्दू मुसलमानो की यही चाह है। एक बाधा अवश्य मिटाई जानी चाहिये।

ब्रिगेडियर—बाधा !! अब भी बाधा ?

गौरी—गुरुदासपूर और पठानकोट से लगी हुई थोड़ी-सी लम्बाई की ही सीमा काश्मीर को हिन्दुस्थान से मिलती है। नाम लेने लायक भी रास्ता नही, जहां होकर काश्मीर का माल और फल हिन्दुस्थान में जा

सके और हिन्दुस्थान की सेना काश्मीर की सहायता के लिये आ सके। जो कुछ भी भला बुरा मार्ग है वह हिन्दू मुसलमानी झगड़े के कारण संकटपूर्ण है इसके लिये क्या किया जाय ?

ब्रिगेडियर—क्या किया जाय ? जो किया जाता है वह किया जाय। लोगों को समझाया जाय और उनके होश को किसी तरह भी हाथ में रक्खा जाय। ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि काश्मीरी और हिन्दुस्तानी मुसलमान बे-खटके और अकेले-दुकेले, बिना किसी सन्त्री और पहरे के इस मार्ग से आ जा सकें, क्यों पश्चिमी और उत्तर के मार्ग अब सदा के लिये नहीं तो बरसों के लिये अवश्य बन्द हुये। पाकिस्तान गाड़ियाँ, हथियार, सिपाही, नेतृत्व और रसद हमारे दुश्मनों को दे ! अपनी दो सौ पचास मील भूमि के ऊपर होकर उनको सुरक्षा और आराम के साथ आने दे !! और हिन्दुस्तान की सभ्यता इस छोटे से और सकरे मार्ग को समाज विरोधी दलों से निस्संकट भी न रख सके !!!

गौरी—अवश्य रख सकेगी जनरल साहब, मुझको पूरी आशा है। हिन्दुस्थान का अनन्त और अमर अलख शीघ्र जागेगा।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) तो जाओ देवी, जगाओ उस अलख को। बहुत दिनों सो चुके हैं। उनके जागते ही क्रूर निष्ठुर बर्बर, अपने-अपने बिलों में भाग जायेंगे।

गौरी—मैं जाती हूँ।

ब्रिगेडियर—अफ़सोस ! हिन्दुस्थान के विरोधियों की महत्वाकांक्षा और बुरी नियत की आगाही को गम्भीरता के साथ नहीं टटोला गया। देश-द्रोही हथियार बन्द अड्डे बनाते चले गये। हम उनका मखौल उड़ा कर आत्म-सन्तोष करते रहे। ओफ़ ! यह अज्ञान हमको बहुत महँगा पड़ा !!

पार्वती—अब भी सम्भल जायें तो समय है।

(नेपथ्य में मोटर भर भर होती)

ब्रिगेडियर—जाओ देवी गौरी। नमस्ते। हम एक सौ बयालीस काश्मीरियों का सारे सभ्य संसार को नमस्ते। देखो गौरी, हम लोगों का खून रक्त बीज का काम करे। इसी आशा पर हम लोग मर मिटने पर जुट पड़े हैं।

गौरी—(जाते जाते, कंठावरोध के साथ) नमस्ते जनरल (वह आँसू पोंछती हुई जाती है) (लौटकर) नमस्ते मेजर, बहिन पार्वती नमस्ते।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—पार्वती, तुम भी चली जातीं तो हम सबको बड़ा चैन मिलता। (बैठ जाता है)

पार्वती—(चिढ़ंककर) आप मुझको कमज़ोर क्यों समझ रहे है?

मेजर भीमसिंह—कमज़ोर नहीं समझते हैं। न मालूम हम लोगों को फैलफुट्ट होकर कहाँ-कहाँ लड़ना पड़े। आप कहीं अकेली पड़ जायेंगीं तो हम सब लोगों को मरने के समय चिन्ता रहेगी।

पार्वती—(और भी तिनककर) कि कहीं पार्वती को कबीलाई उठा तो नहीं ले गये! आप भी विलक्षण हैं!! आप नहीं जानते कि पार्वती हिमालय पर्वत की कन्या है, हिम सदृश कठोर। राइफ़िल, रिवाल्वर, हलगोला इत्यादि सब साथ में होगा, फिर चिन्ता किस बात की?

ब्रिगेडियर—तब फिर···

पार्वती—तब भी क्या? आप ही सरीखे संदेही पुरुषों ने स्त्रियों को लड़ने न देकर चिताओं पर जल जाने के लिये विवश किया। मेवाड़ के इतिहास में मैंने पढ़ा है—एक राजपूतानी ने इसी सन्देह के कारण अपना सिर अपने हाथ से काटकर पति की गोदी में डाल दिया था।

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) देवी, क्षमा करो। मुझको तुम्हारी हिम्मत और हथियार चलाने की चतुराई पर पूरा भरोसा है।

(बैठ जाता है)

पार्वती—(हँसकर) मै सरसों के तेल, आलू और चाय की पत्तियों तक से भीड़ की भीड़ को उड़ा देने वाले बम भी बनाना जानती हूं। पकड़ भी ली गई, जो कि असम्भव है, तो सैकड़ों हजारों दुश्मनों को राख करके मरूँगी।

(नेपथ्य में दो धड़ाके होते है)

ब्रिगेडियर—हूँ मेजर, समय आयगा। देखो क्या है ?

(मेजर भीमसिंह जाता है)

पार्वती—यह कोई दुश्मन का दूसरा भेदिया है। दुश्मन का कोई छोटा-सा भी दस्ती नहीं होगा। वे पुल को ऐसी आसानी के साथ पार नहीं कर सकेंगे।

ब्रिगेडियर—(मुस्कराकर) ठीक कहती हो, देवी। मेजर के पीठ फेरते ही मेरे अन्तर्मन में से भी यह बात उठी।

पार्वती—जान पड़ता है कि लड़ाई और भी विकट घोरता के साथ लड़नी पड़ेगी।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) मौक़ा तो अब आया है देवी, जब अपनी एक एक जिन्दगी को उनकी सौ-सौ मौतों से तौलना है।

पार्वती—(खड़ी होकर) इस समय हमारे बड़े किस कल्पना या सिद्धान्त के साथ तुक लगा रहे होंगे ? उनको क्या मालूम कि हम लोग किस तरह मर रहे है। (बैठ जाती है) परन्तु उनका क्या दोष है ? वे क्या करें ?

ब्रिगेडियर—दोष यह है कि विरोधियों की उत्पन्न की हुई समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण राजनैतिक न होकर और आदर्शवादी रहा है और उन्होंने नये नये और पराक्रम-पूर्ण काम करने की अपनी शक्ति को कमजोर कर डाला है।

पार्वती—परन्तु वे दृढ़तापूर्वक हम लोगों की सहायता करेंगे। सम्भव है हिन्दुस्थानी सेना इसी घड़ी आ रही हो।

ब्रिगेडियर—(हँसकर) इस आशा में प्राणों को मत अटकाओ, देवी। सहायता आवे या न आवे अपना कर्तव्य साफ है—हमको हर हालत में इन आताताइयों को पुल के उसी पार रखना है। यह क्या कम है कि हम इनके मन चाहे समय पर श्रीनगर मे धसने नहीं देंगे ?

पार्वती—ठीक है जनरल, हम लोगों को मरने के बदले में इतना मिल जायगा तो बहुत है। मौत एक बार आती है केवल एक बार। डरपोक रोज रोज मरते है। हम लोग अपने देश के लिये मर कर जो धारा बहा जायेंगे वह अभङ्ग और अखण्ड रहेगी। वह···

(अर्दली और मेजर भीमसिंह एक कबीलाई को पकड़ कर लाते हैं। उसके दाढ़ी-मूछ है। आंखें चंचल, परन्तु सहमी हुई। जबड़ा, नाक-मोटी और कमानीदार। सारी आकृति दृढ़ता क्रूरता और वध-निष्ठा की। हरी पगड़ी, हरा ढीला कुरता जिस पर मोटा सलूका। उसी रंग की खाकी सलवार जो काफी ढीली और पांयचेदार है। इसके कपड़े कई जगह से फटे हैं। अर्दली एक ओर इस पर बन्दूक ताने है। दूसरी ओर भीमसिंह इस पर अपना रिवाल्वर सीधा किये है। कैदी की अवस्था अधेड़ से कम है।)

मेजर भीमसिंह—इसने हमारे एक सिपाही को मार डाला है !

ब्रिगेडियर—(खड़े होकर) ऐं ! हमारे सिपाही को मार डाला है !! सौ बैरियों को मौत के घाट उतारने वाला एक अनमोल प्राण चला गया !! मार दो इसको तुरन्त। (वे लोग अचेष्ट होते है) ठहरो ! इससे कुछ पूछना है। कैदी कहां का रहने वाला है ?

कैदी—बज़ीरिस्तान से भी दूर का।

ब्रिगेडियर—यहां क्यों आया ?

कैदी—आया नहीं अमको भेजा गया लूटने और मार डालने और आग लगाने और औरतों को पकड़ ले आने के वास्ते और—

ब्रिगेडियर—वेहया कहीं का ! अब इसके आगे भी कुछ और है ?

क़ैदी—हां है। तुमने पूच्छा अमने बतलाया। और फ़सलों को तबाह करने वास्ते, काश्मीर को आजाद करने वास्ते, बस। हुकुम था। अमारा कोई कसूर नहीं।

ब्रिगेडियर—फिर मुसलमानों को क्यों मारा ? उनकी औरतों को क्यों बेइज्जत किया ?

क़ैदी—क्योकि अमारे कमान अफसर को अच्छा लगा, इसलिये मारा। क्योंकि जब हिन्दू मारने को नई मिला तो मुसलमानों को मार दिया। क्योंकि उसके पास पैसा और मवेशी था और अमारे पास कुच नईं।

ब्रिगेडियर—काश्मीर पर ही क्यों हमला किया ?

क़ैदी—अमको नही मालूम। हुकुम था।

ब्रिगेडियर—काश्मीर में क्या करोगे ?

क़ैदी—मकानों में रहेंगे। श्रीनगर में दुम्बे पालेंगे।

पार्वती—खेती करेगा ?

क़ैदी—नई करेगा। तुम अमारे साथ चलेगा तो अलबत्ता कुच तो भी करेगा।

पार्वती—(रिवाल्वर निकाल कर) इसको खायगा ?

क़ैदी—(भयभीत होकर) औरत गोली मारने लगा ! ओ बाबा !! अमको बतलाया गया कि औरत तो कुच कर नहीं सकता और काश्मीर का आदमी निकम्मा है।

पार्वती—अब तुमको और तुम्हारे हुकुम देने वालों को जल्दी मालूम हो जायगा कि हम लोग तुमको कच्चा चबा जायंगे।

क़ैदी—ओह ! हिन्दुस्तान का औरत इतना बुरा हो गया है ये अम को कबी नईं बतलाया गया ! अमारा सरदार बोला वो तो फूक मारने से उड़ाया जा सकता है, मगर ये तो कुच और है। बाबा !!

ब्रिगेडियर—तुम यहां किस वास्ते आया ? सच-सच बतलाना।

क़ैदी--अमका हुकुम था ब्रिगेडियर को मार दो कम्प में आग लगा दो, सब लोग पीछे आता है। बस।

ब्रिगेडियर--अच्छा ! ब्रिगेडियर हम ही हैं। अब देखो कौन किस को मारता है--

[कैदी छाती के पास हाथ ले जाता है। अर्दली समझ जाता है और उसकी छाती पर बन्दूक अड़ा देता है। मेजर भीमसिंह कैदी की कनपटी पर रिवाल्वर के मुँह को चिपका देता है। ब्रिगेडियर तुरन्त उछलकर कैदी का हाथ पकड़ लेता है और उसकी छाती के पास से रिवाल्वर को झपट लेता है।]

क़ैदी--(निराशा के स्वर में) अब अमारे पास कुच नईं ओफ़ ! ओ !!

मेजर--खुदाई खिदमतगार का नाम सुना है।

कैदी--सुना है। वो तो हमारा दुश्मन है।

मेजर--हम सब को खुदाई खिदमतगार समझो। तुम्हारी खिदमत अभी हाल होती है।

ब्रिगेडियर--तुमने हमारे सिपाही को मारा ?

कैदी--(अधिक भयभीत होकर) ऐं···ऐं···नइं तो।·· वो··· अमारा बन्दूक चल गया। बो मर गया बस।

ब्रिगेडियर—अच्छा, एक बार बन्दूक फिर चलेगी और अब की बार तुम मरोगे। (मेजर भीमसिंह और अर्दली से) ले जाओ इस डाकू को यहां से उड़ा दो इसका खोपड़ा। इसके जवाबों से घृणा ही और बढ़ेगी। कोई लाभ नहीं अधिक सवाल करने से। (वे दोनों उसको घसीट ले जाते हैं। बाहर धड़ाका होता है और किसी के गिरने की आवाज़)

पार्वती—इन लोगो को सिखलाया गया है कि गैर मुसलमान खास तौर पर और सारे काश्मीरी आम तौर पर कमजोर है और सहज ही

दबोचे जा सकते हैं। इसलिये इन लोगों ने इतना दुस्साहस किया···और इसलिये यह कैदी इस तरह बर्ता मानों हम लोग कुछ भी न हों।

ब्रिगेडियर—ये पहाड़ी बिल्लियां हैं। इनको समझाया गया होगा कि काश्मीरी निरे चूहे हैं।

(मेजर भीमसिंह और अर्दली आते हैं)

मेजर—जनरल साहब, अब सारा कस पुल पर लगा देना है। इस आदमी ने टेलीफोन के कई तार काट डाले हैं।

ब्रिगेडियर—ओह ! चलो समय आ गया है। (हँसकर) अर्दली अब हम सब लोग मौत के साथ शादी करमे जा रहे हैं।

अर्दली—(हँसकर) सबसे पहले मैं जनरल साहब।

ब्रिगेडियर—नही, सबसे पहले जनरल। देखो मेरी ब्रिगेड के नाम को बट्टा न लगने पावे मेरे बाद।

पार्वती—पहले मैं जाती हूँ और किसी टोली की कमान को सम्भालती हूं। (मुस्कराकर) अब आपको सन्देह नहीं रहेगा कि न जानें मेरे पीछे किसका क्या होगा।

(जाती है)

ब्रिगेडियर—ठहरो देवी ! ठहरो देवी कैप्टेन पार्वती। रुको **बहन,** तुम्हारा ब्रिगेडियर तुमको आदेश देता है।

पार्वती—(जाते जाते) और भवानी दुर्गा देवी मेरी ब्रिगेडियर है। अब नमस्ते। प्यारे काश्मीर और प्यारे भारत को नमस्ते।

(गई)

ब्रिगेडियर—हूं—हाँ—(गला साफ़ करता है। उन दोनों की आंखें भर आती हैं। रूमाल से पोंछ लेते हैं) दवाइयां और ज़रूरी सामान तो डाक्टर गौरी के साथ चला गया है ?

मेजर—जी हां। सब।

ब्रिगेडियर—अब अपने सब कीमती सामान में आग लगा दो दुश्मन के हाथ हमारी एक कौड़ी भी न लगने पावे।

मेजर भीमसिंह—हमारे मारे जाने के बाद केवल हमारे हथियार उनके हाथ लगेंगे।

ब्रिगेडियर—(दोनों मुट्ठियां बांधकर) यह एक चिन्ता अवश्य है।

मेजरभीमसिंह—परन्तु शायद सहायक सेना आ जावे और ये हथियार उसी के हाथ लग जावें।

ब्रिगेडियर—और शायद हमारे शवों का दाह, क्रियाकर्म, श्राद्ध-तर्पण भी सहायक सेना करदे! (गम्भीर होकर) प्यारे मेजर, अब सब प्रकार के सहारों की ओर से मन को मोड़कर परमात्मा को याद करो और जितनी देर तक हो सके इन लुटेरों, हत्यारों को नमला पुल से इस ओर मत आने दो। ये हथियार यदि इतना कर सके तो बहुत हो गया।

मेजर भीमसिंह—दुश्मन हमारी लाशों पर ही होकर आ सकेगा। मैं जाता हूँ।

ब्रिगेडियर—ठहरो भाई भीमसेन, पहले मैं मरूँगा। इतने स्वार्थी मत बनो। मेरे सब मित्र पहले चले जायँ और मैं अकेला रह जाऊँ!

मेजर भीमसिंह—मित्रों के मारे जाने पर आपका खून और भी दमकेगा, बल और भी चमकेगा।

अर्दली—क्या मैं आपका कोई नहीं हूं?

ब्रिगेडियर—(आगे बढ़कर) क्यों नहीं? तू मेरा मित्र है, मेरा भाई है। (अर्दली को छाती से लगा लेता है)

मेजर भीमसिंह—हमारी ब्रिग्रेड का नाम है मौत ब्रिगेड। हम सब भाई भाई हैं। कोई छोटा बड़ा नहीं। (वे सब एक दूसरे को छाती से लगाते हैं)

(नेपथ्य में मशीनगन चलने का शब्द होता है)

ब्रिगेडियर—यह हमारी बहिन पार्वती का काम है। हमारी बहिनों और भाइयो के नाम पर काश्मीर के फूल सदा खिलते रहेंगे।

मेजर भीमसिंह—तो चलिये हम लोग पीछे नहीं रहेंगे। छप्पन घण्टे हो गये हैं बिना नींद के। अब अकाल की गोद में सुख से सोयेंगे।

अर्दली—चलिये और कुछ मेरा भी जौहर देखिये। पहरा लगाते-लगाते थक गया हूँ।

तीनों—चलो। जय काश्मीर !

जयहिन्द !! जयहिन्द !!! जयहिन्द !!!!

(तीनों जाते हैं। नेपथ्य में मशीनगन चलने की आवाज़ होती है, और प्रकाश होता है। यवनिका गिरती है।)

❀ इति ❀

प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार

श्री वृन्दावनलाल वर्मा

— की —

एक और कलात्मक ऐतिहासिक रचना

'भुवन विक्रम'

— जिसमें —

१. उत्तर वैदिक काल का शिक्षाप्रद, खोजपूर्ण वर्णन
२. समय और अनुशासन की परिपाटी का विवेकपूर्ण अनुशीलन,
३. जीवन की विविध झांकियों में ओज की सद्यता,
४. वर्णन में आकर्षक, प्रवाह और स्वाभाविक गति
५. मानव प्रकृति का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण
६. भाषा में प्रवाह, सजीवता और रोचकता और
७. बड़ा ही उथल-पुथलपूर्ण ऐतिहासिक कथानक

एक साथ सब आपको मिलेगा। पुस्तक की रोचकता आपको अनेक बार पढ़ने के लिये विवश कर देगी।

पृष्ठ ३५६ सजिल्द मूल्य ३॥)

मयूर-प्रकाशन, झाँसी।

श्री वृन्दावनलाल वर्मा-साहित्य

उपन्यास

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ६)
माधव जी सिंधिया ६)
मृगनयनी ५)
अमरबेल ५)
कचनार ४॥)
टूटे कांटे ४।)
भुवनविक्रम ३॥)
अचल मेरा कोई ३॥।)
सोना ३)
अहिल्याबाई २।)
मुसाहिबजू १॥)
प्रेम की भेंट १।)
लगन १।)
बिराटा की पद्मिनी ४)
कुण्डली चक्र २।)
संगम २)
प्रत्यागत १॥)
बुन्देलखंड के लोकगीत ॥)

श्री परिपूर्णानन्द वर्मा कृत

प्राण दण्ड ५)
She was not Ashamed 2/-
कहा-सुनी १॥)
ऐसा-वैसा २)

श्री प्रकाश सक्सेना कृत

धरती बिहँसी १॥)

★

वर्मा जी को भेंट

—

डालमिया पुरस्कार
२१००)

साहित्यकार-संसद-पुरस्कार
१०००)

उ० प्र० राज्य पुरस्कार
१०००)–१०००)

म० भा० राज्य पुरस्कार
१०००)

नागरी प्रचारिणी पुरस्कार
२५०)

भारत सरकार का प्रथम पुरस्कार
२०००)

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
५००)

★

नाटक

हंस मयूर २।)
पूर्व की ओर २।)
झांसी की रानी २)
ललितविक्रम १॥)
राखी की लाज १।)
केवट १।)
खिलौने की खोज १।)
नीलकण्ठ १।)
बीरबल १।)
फूलों की बोली १।)
कनेर १)
बांस की फांस १)
मंगल सूत्र १)
काश्मीर का काँटा १)
निस्तार १)
लो भाई पंचो लो ॥।)
पीले हाथ ॥।)
जहांदारशाह ॥।)
सगुन ॥।)
देखा देखी ॥।=)

कहानी–संग्रह

दबे पांव २)
मेंढकी का ब्याह १)
अम्बरपुर के अमरवीर १)
ऐतिहासिक कहानियां १)
अँगूठी का दान १)
शरणागत १।)
कलाकार का दण्ड १।)
तोषी १)

मयूर–प्रकाशन, झांसी ।